सेक्स से फैलने वाले संक्रमण (एस0टी0आई0) और एच0आई0वी0

एस0टी0आई0 क्या है?

सेक्स से फैलने वाले संक्रमण (एस0टी0आई0) और सेक्स संक्रामक रोग ऐसे संक्रमण होते है एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति तक विभिन्न प्रकार की सेक्स गतिविधियो से फैलता है. कुछ एस0टी0आई0 तो निकट शारीरिक सम्पर्क से भी फैलते है.

एस0टी0आई0 किसे हो सकता है?

एस0टी0आई0 के विषय मे सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि हर कोई जो सेक्स मे भाग लेता है, उसे एस0टी0आइ0 हो सकता है: यदि आप युवा है या प्रौढ, स्त्री या पुरुष, समलैंगिक या नही, आपके एस0टी0आई0 से संक्रमित होने और संक्रमण फैलाने की सम्भावना बराबर होती है. साथ ही ऐसा होने के लिये आपको सेक्स मे अनेक साथियो की भी आवश्यक्ता नही है.

एस0टी0आई0 कितने प्रकार का होता है?

एस0टी0आई0 के पच्चीस से भी अधिक प्रकार है. इनमे से कुछ आम संक्रमण इस प्रकार है:

- क्लैमीडिया
- गोनोरिया (मूत्ररोग)
- गुप्तांगो मे छाले
- हर्पीस
- सिफिलिस
- एच0आई0वी0
- गुप्तांगो मे जूं
- हेपटाइटिस बी

अच्छा समाचार यह है कि अधिकतर सेक्स से होने वाले संक्रमण (एच0आई0वी0 के अतिरिक्त) का उपचार सरल और कम समय मे सम्भव है, यदि इनकी पहचान आरम्भिक चरण मे हो जाये. यदि किसी संक्रमण का उपचार न किया जाये तो अन्त मे वह पीड़ादायक और असुविधाजनक हो जाता है और इससे लम्बे समय मे स्वाथ्य समस्याए हो सकती है जैसे महिलाये मे बांझपन, हृदय और मस्तिष्क को हानि, सम्भवत: मृत्यु. यह याद रखना भी आवश्यक है कि बिना उपचार के एक संक्रमित व्यक्ति के एच0आई0वी0 से संक्रमित होने और संक्रमण आगे फैलाने की सम्भावना अधिक हो जाती है.

एस0टी0आई0 कैसे होता है?

एस0टी0आई0 वायरस, किटाणु, और परजीवियो के कारण होते है. उदाहरण के लिये हर्पीस और गुप्तांगो मे छाले वायरस के कारण होते है, जबकि क्लैमीडिया, गोनोरिया (मूत्ररोग) और सिफिलिस का कारण किटाणु होते है. गुप्तांगो मे जूं परजीवियो के कारण होती है.

कैसे पता लगाया जाये कि किसी को एस0टी0आई0 है?

यदि आपको सेक्स के दौरान संक्रमण हो गया है तो आपको ऐसे अनेक लक्षण देखने को मिलेंगे जिससे पता चल सकता है कि कोई समस्या है किन्तु यह भी सम्भव है कि कोई लक्षण न दिखे. सभी संक्रमित व्यक्तियो मे लक्षण नही दिखते, कुछ संक्रमण बिना लक्षण के ही कार्य करते है. कुछ संक्रमण मे लक्षण आते जाते रहते है जबकि संक्रमण बना रहता है. कभी कभी आपको एकसे अधिक संक्रमण भी हो सकते है. इसीलिये यह आवश्यक है कि यदि आपने असुरक्षित सेक्स किया हो और आपको लगे कि आप संक्रमित हो गये है तो तुरंत डाक्टर से सलाह ले- चाहे संक्रमण का कोई लक्षण दिखाई न भी दे. सेक्स से फैलने वाले संक्रमण के साधारण लक्षण इस प्रकार है:

- योनि अथवा शिश्न से असाधारण द्रव्य निकलना - यह गाढा या पतला, अस्पष्ट, सफेद, पीला अथवा हरा भी हो सकता है. इसमे बदबू भी हो सकती है.
- मूत्र के समय जलन या पीड़ा.
- गुदा या गुप्तांगो के निकट खुजली, चोट, छाले अथवा फोड़े.
- गुप्तांगो मे पीड़ा.
- पेट के निचले भाग मे पीड़ा.
- सेक्स के बाद रक्तस्राव.
- सेक्स के दौरान पीड़ा और/अथवा रक्तस्राव.
- अंडकोश मे पीड़ा.

यदि आप इनमे से किसी लक्षण अथवा समस्या से ग्रस्त नही है तब भी यदि आप निम्नलिखित मे से किसी एक परिस्थिती मे है तो आपको सलाह और जांच की आवश्यक्ता है:

- आपने हाल मे ही किसी नये साथी के साथ सेक्स किया है.
- आप या आपके साथी ने अन्य किसी के साथ बिना कंडोम के सेक्स किया है.
- आपके साथी मे संक्रमण का कोई लक्षण दिख रहा है.

लक्षण आमतौर पर दो से चौदह दिनो के भीतर दिखने लगते है, किंतु कभी इसमे चार सप्ताह से अधिक भी लग सकते है (कभी कभी इससे भी अधिक). एच0आई0वी0 संक्रमण मे कई वर्षो तक कोई भी लक्षण नही होता. संक्रमण के बाद जांच मे एच0आई0वी0 को ढूंढने के लिये भी संक्रमण 3 माह से अधिक पुराना होना चाहिये.

एस0टी0आई0 कैसे होता है?

आमतौर पर सेक्स द्वारा. वीर्य, गर्भाषय के द्रव्य और रक्त सभी संक्रमण के वाहक होते है.

यह आवश्यक नही है कि संक्रमण के लिये इन द्रव्यो का स्राव हो. इससे पहले कि यह द्रव्य सेक्स की क्रिया मे मुक्त हो, वीर्य की थोड़ी मात्रा शिष्न से निकल सकती है और उतनी ही संक्रामक हो सकती है. एस0टी0आई0 से सक्रमित होने के लिये "पूरी सेक्स" क्रिया की आवश्यक्ता नही होती है. कुछ संक्रमण केवल एक व्यक्ति के

गुप्तांगो के दूसरे व्यक्ति के गुप्तांगो के सम्पर्क मे आने से ही हो सकते है (जब शिश्न केवल योनि से छुआ भर हो). एस0टी0आई0 जैसे हर्पीस केवल मौखिक सेक्स से हो सकते है (जब कोई व्यक्ति अपने साथी के गुप्तांगो को चाटे या चूमे). संक्रमण जैसे गुप्तांगो मे जूं- जो कि कीड़ो से समान रेंगने वाले जंतु होते है- त्वचा के सम्पर्क मे आने भर से हो सकते है.

आम एस0टी0आई0 और उनके उपचार

एच0आई0वी0 और एड्स

एच0आई0वी0 का अर्थ है ह्युमन इम्यूनोडेफिशिएंसी वायरस. यह एक ऐसा वायरस जो मानवीय प्रतिरक्षा-तंत्र को संक्रमित करता है और लोगो को असाधारण रोगो और कैंसर से जूझने के लिये छोड़ देता है जोकि आम परिस्थितियो मे जानलेवा नही होते. यह संक्रमण "अवसरवादी संक्रमण" होते है और इनमे दमा, पेट और आंत के संक्रमण जैसे डायरिया, मुंह मे छाले, मस्तिष्क मे संक्रमण जैसे टोक्सोप्लास्मोसिस और मस्तिष्क लिम्फोमा होते है.

एच0आई0वी0 शारीरिक द्रव्यो मे उपस्थित होता है जैसे रक्त, वीर्य, गर्भाषय के द्रव्यो मे और मां के दूध मे. कोई भी कारण जिससे यह द्रव्य त्वचा को भेद कर या किसी गीली सतह से या रक्तप्रणाली मे प्रवेश कर जाये, वह एड्स का कारण हो सकती है. आमतौर पर त्वचा ऐसे संक्रमण मे कवच के रूप मे काम करती है किंतु त्वचा के कटने, फटने और छिलने, फोड़े और घाव से संक्रमण सम्भव है.

एच0आई0वी0 मुख्यत: अप्राकृतिक और प्राकृतिक असुरक्षित सेक्स से फैलता है या फिर रक्त से सम्पर्क मे आने से. दूसरी स्थिती तब सम्भव है जब कई लोग एक ही इंजेक्शन का प्रयोग करे जैसे कि ड्रग्स का उपयोग करने वाले लोगो मे. एच0आई0वी0 कभी कभी मौखिक सेक्स से भी फैल सकता है- विशेषत: तब जब एक साथी को कोई अनुपचारित सेक्स संक्रमण हो. आप तब असुरक्षित सेक्स से एच0आई0वी0 संक्रमण के और खतरे मे पड़ जाते है जब आपको फोड़े, चोट या छिलने की समस्या मुंह मे या मसूड़ो मे हो, या फिर आपको मुंह या गले मे किसी प्रकार का संक्रमण हो जिसमे सेक्स संक्रमण भी शामिल है.

कोई एच0आई0वी0 संक्रमित महिला अपने शिशु को गर्भ मे, जन्म के दौरान, या फिर स्तनपान से संक्रमित कर सकती है.

लक्षण

एच0आई0वी0 के कोई लक्षण नही होते, और जब वे दिखायी देते है तो उन्हे अनदेखा कर लक्षण देना सरल है क्योकि वह ठंड, बुखार, सूजन या गला खराब होने जैसे आम समस्याये होते है. आमतौर पर एच0आई0वी संक्रमित लोग लम्बे समय तक स्वस्थ्य दिखते और महसूस करते है (कभी कभी तो 10 वर्षो तक या इससे भी अधिक) और उन्हे पता भी नही चलता कि वे किसी वायरस से संक्रमित है. वे फिर भी यह वायरस अपने वीर्य, रक्त औत गर्भाषय के द्रव्यो से अन्य लोगो मे फैला सकते है. कुछ समय बाद, अन्य लक्षण जैसे मसूड़ो मे और गले मे छाले दिखने लगते है.

जैसे जैसे समय बढता है अवसरवादी संक्रमण दिखने लगते है. फिरभी किसी व्यक्ति मे पूर्ण रूप से एड्स के विकसित होने मे कई वर्ष लगते है. पूर्ण रूप से एड्स विकसित होने और किसी रोगी की मृत्यु के बीच का समय 6 माह से 2 वर्ष तक हो सकता है. एड्स की पहचान के लिये लक्षण इस प्रकार हो सकते है:

- एक माह से अधिक तक ज्वर

- एक माह से अधिक तक डायरिया
- गम्भीर या बार बार होने वाले त्वचा संक्रमण
- कैंसर जैसे कपोसी सर्कोमा
- एक माह से अधिक तक गुप्तांगो या गुदा मे गांठ
- एच0आई0वी0 सम्बंधित मस्तिष्क समस्याए

आमतौर पर इनमे से एक या अधिक अवसरवादी संक्रमण उपस्थित हो सकते है.

उपचार

अभी तक एच0आई0वी0 और एड्स का कोई उपचार नही है. ऐसे बहुत से साधन उपलब्ध है जो कि वायरस से ग्रस्त लोगो के जीवन को सुधार सकते है और उनकी आयु बढा सकते है. इन उपचार साधनो के कई अवांछित प्रभाव हो सकते है और यह भी आवश्यक नही है कि यह सभी रोगियो के लिये कारगर हो.

बचाव

मौखिक सेक्स के दौरान कंडोम या अन्य सुरक्षा साधन, अप्राकृतिक या प्राकृतिक सेक्स के दौरान कंडोम के प्रयोग से संक्रमण को फैलने से बचाया जा सकता है. यदि आप इंजेक्शन द्वारा नशीले पदार्थो का सेवन करते है तो एच0आई0वी0 संक्रमण का जोखिम कम करने के लिये स्वच्छ और साफ इंजेक्शन और सूइयो का प्रयोग करे. ऐसे स्पष्ट प्रमाण मिले है कि एक अनुपचारित सेक्स संक्रमण किसी व्यक्ति के एच0आई0वी0 से संक्रमित होने की सम्भावना को बढा देता. ऐसा इसलिये भी हो सकता है क्योकि सेक्स संक्रमण के कारण प्राय: त्वचा मे खुले घाव और फोड़े हो जाते है. सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि यदि कोई अनुपचारित सेक्स संक्रमण का शिकार व्यक्ति असुरक्षित सेक्स मे भाग लेता है तो उसके एच0आई0वी0 से संक्रमित होने की सम्भावना बढ जाती है.

सेक्स रोगो की नियमित जांच से भी आपके वायरस से संक्रमित होने की सम्भावना कम की जा सकती है.

क्लैमीडिया

क्लैमीडिया एक व्यापक किटाणु संक्रमण है जो महिलाओ और पुरुषो दोनो को ही संक्रमित करता है. यह असुरक्षित मौखिक, प्राकृतिक और अप्राकृतिक सेक्स से फैलता है और गुदा, शिश्न, गर्भाषय, गले और आंखो को प्रभावित करता है.

अनुपचारित क्लैमीडिया किसी एच0आई0वी0 संक्रमित व्यक्ति को अधिक संक्रामक बना सकता है क्योकि क्लैमीडिया प्रभावित क्षेत्र मे कोमल त्वचा (कवच का कार्य करने वाली) की परत को भेद देता है, और इन क्षेत्रो मे एच0आई0वी0 संक्रमित कोशिकाओ की संख्या को बढा देता है. क्लैमीडिया होने से किसी स्वस्थ्य व्यक्ति के वायरस से सम्पर्क मे आने पर संक्रमित होने की सम्भावना बढ जाती है.

क्लैमीडिया एक गर्भवती मां से शिशु को जन्म के दौरान फैल सकता है और शिशु की आखो को प्रभावित कर सकता है, और निमोनिया भी हो सकता है.

लक्षण

क्लैमीडिया के लक्षण सामान्यत: संक्रमण के एक से तीन सप्ताह मे दिखने लगते है. अधिकतर मामलो मे लोगो को यह पता नही होता कि वह क्लैमीडिया से संक्रमित है. यह भी माना जाता है 50 प्रतिशत पुरुषो और 70 प्रतिशत महिलाओ मे क्लैमीडिया संक्रमण के बाद कोई लक्षण दिखायी नही देता है. लक्षण इतने सामान्य हो सकते है कि कई सप्ताहो तक बिना जाने, विकसित होता रहता है. जब लक्षण दिखायी देते है तो वह इस प्रकार हो सकते है:

- शिश्न या योनि से दूधिया पदार्थ का स्राव.
- अंडकोष मे पीड़ा और सूजन.
- सेक्स मे पीड़ा .
- सेक्स मे योनि से रक्त-स्राव.
- मासिक धर्म के बीच रक्त स्राव.
- महिलाओ मे, क्लैमीडिया के कारण पीठ के निचले भाग मे दर्द.
- यदि संक्रमण गुदा से हुआ है तो गुदा के निकट दर्द और स्राव.

यदि क्लैमीडिया का उपचार न किया जाये तो यह महिलाओ मे कमर मे जलन (पेल्विक इंफ्लेमेट्री डिज़ीज़ अथवा पी0आई0डी0) का कारण ओ जाता है जिससे बांझपन और चरम सीमा मे मृत्यु भी हो सकती है. पुरुषो गम्भीर समस्याओकी सम्भावना कम होती है किंतु उपचार न कराने की स्थिति मे नपुंसकता सम्भव है. महिलाओ और पुरुषो दोनो मे ही अनुचारित क्लैमीडिया गठिया मे विकसित हो सकता है.

उपचार

क्लैमीडिया का प्रतिजैविक दवाओ से उपचार सरलता से हो सकता है. इसमे सात दिनो के लिये डॉक्सीसाइक्लीन या अज़ीथ्रोमाइसीन की एक खुराक पर्याप्त होती है. यह आवश्यक है कि आप सभी गोलिया समय से ले जिससे संक्रमण आपके शरीर से पूर्ण रूप से समाप्त किया जा सके. सम्भव है कि आपको उपचार के समय सेक्स न करने की सलाह दी जाये (कंडोम के साथ भी)- यह केवल पुन: संक्रमण रोकने के लिये है.

बचाव

सेक्स के समय (मौखिक सेक्स मे भी) कंडोम का प्रयोग क्लैमीडिया से बचाव का कारगर उपाय है और संक्रमण को फैलने से रोक सकता है. यदि आप सेक्स मे सक्रिय रूप से भाग लेते है तो आपको नियमित रूप से सेक्स स्वास्थ्य की जांच करानी चाहिये, जहां आपकी क्लैमीडिया और अन्य सेक्स संक्रामण की जांच होग़ी.

गोनोरिया

गोनोरिया (अंडकोष मे सूजन)रोग ऐसे किटाणु के कारण होता है जो कि संक्रमित पुरुषो और महिलाओ के वीर्य और गर्भाषय के द्रव्यो मे पाया जाता है. यह किटाणु शरीर के गीले भागो जैसे गले, योनि, गुदा, शिश्न और मूत्रनली मे भी जीवित रह सकता है. यह रोग हर प्रकार के असुरक्षित सेक्स क्रिया से फैलता है और गुदा, शिश्न, गर्भाषय और गले को प्रभावित करता है.

क्लैमीडिया के समान अनुपचारित गोनोरिया भी एच0आई0वी0 संक्रमित व्यक्ति को अधिक संक्रामक बना देता है क्योकि इससे जनांगो के निकट और मुंह और गले मे एच0आई0वी0 संक्रमित कोशिकाओ की संख्या बढ

जाती. गोनोरिया के कारण यदि कोई स्वस्थ्य व्यक्ति इस वायरस के सम्पर्क मे आये तो उसके एच0आई0वी0 से संक्रमित होने की सम्भावना भी बढ जाती है.

गोनोरिया संक्रमण माता से शिशु को जन्म के समय भी फैल सकता है, जिसका प्रभाव शिशु की आंखो पर पड़ता है और यदि बिना उपचार के छोड़ दिया जाये तो अंधापन भी हो सकता है.

लक्षण

गोनोरिया के लक्षण समान्यत: संक्रमण के दो से दस दिनो मे दिखने लगते है. किंतु अधिकतर लोग इन लक्षणो को लक्षणो के रूप मे पहचान नही पाते है क्योकि यह सदा नही दिखते या बहुत गम्भीर नही होते. गोनोरिया रोगी दस मे से एक पुरुष और दो मे से एक महिला मे कोई लक्षण नही दिखता. गले मे होने वाले गोनोरिया के लक्षण कुछ दुर्लभ मामलो मे ही दिखते है. यदि संक्रमण के लक्षण दिखे, तो वह इस प्रकार होते है:
शिश्न या योनि से सफेद, पीले या हरे द्रव्य का स्राव जिसमे तीव्र बदबू हो सकती है. इस स्राव मे रक्त भी हो सकता है.

- मूत्र के समय पीड़ा या जलन.
- अंडाषयो मे पीड़ा या सूजन.
- गले मे गोनोरिया के कारण गला रूंध सकता है.
- महिलाओ मे गोनोरिया के कारण पेट के निचले हिस्से मे पीड़ा हो सकती है.

यदि उपचार न किया जाये, गोनोरिया और भी गम्भीर समस्याओ का कारण हो सकता है, जैसे महिलाओ मे पी0आई0डी0, जिसके कारण पीड़ा, बांझपन और गर्भ मे समस्या (जैसे गर्भ का गर्भाषय के बाहर विकसित होना) हो सकते है. पुरुषो मे, गोनोरिया के कारण अंडाषयो मे पीड़ादायक संक्रमण हो सकता है और इससे प्रजनन क्षमता कम हो सकती है. कुछ चरम उदाहरणो मे संक्रमण के कारण मस्तिष्क और रीढ की नस की त्वचा मे और हृदय मे जलन फैला सकता है.

उपचार

उपचार बहुत ही सरल और प्रभावशाली होता है और उसमे प्रतिजैविक पदार्थ की एक खुराक का प्रयोग किया जाता है. यह बहुत आवश्यक है कि उपचार के सात दिनो तक किसी प्रकार के असुरक्षित सेक्स मे भाग न लिया जाये, क्योकि इससे आप गोनोरिया से पुन: संक्रमित हो सकते है या फिर आप संक्रमण किसी और को फैला सकते है.

बचाव

मौखिक सेक्स मे कंडोम और बचाव उपाय, योनि और गुदा से सेक्स के समय कंडोम गोनोरिया से संक्रमित होने से और संक्रमण फैलाने के बचाव मे प्रभावशाली है. नियमित सेक्स स्वास्थ्य जांच, गोनोरिया और अन्य सेक्स संक्रमण से बचाने मे सहायक हो सकती है.

हर्पीस

हर्पीस का कारण दो प्रकार के साधारण हर्पीस वायरस हो सकता है. एक प्रकार का वायरस मुंह के आस पास छाले का कारण बनता है, जबकि दूसरा जनांगो के आस पास छाले फैलाता है. हर्पीस सामान्यत: इन छालो से सम्पर्क मे आने पर फैलता है: चूमने से, असुरक्षित सेक्स से संक्रमण फैल सकता है. एक बार आप इस हर्पीस वायरस से संक्रमित हो गये, तो आप जीवन भर संक्रमित रहेंगे- किंतु हर्पीस के लक्षण उपचार के ठीक हो सकते है.

लक्षण

छालो के अतिरिक्त हर्पीस के लक्षण कुछ इस प्रकार के हो सकते है:

- पेट, पीठ और पैरो मे पीड़ा और जुकाम जैसे लक्षण.
- छालो के दिखने से पहले प्रभावित क्षेत्र मे खुजली.

उपचार

आपके प्रतिरक्षा प्रणाली इस वायरस को नियंक्त्रण मे रखने के लिये पर्याप्त है किंतु कुछ दवाए इस प्रक्रिया मे सहायक हो सकती है. विशेष गोलिया और क्रीम छालो का उपचार कर सकते है, और कुछ अन्य दवाए छालो को आने से रोक सकती है.

बचाव

खुले छलो के सम्पर्क मे आने से बचे और मौखिक सेक्स मे कंडोम और बचाव उपाय, योनि और गुदा से सेक्स के समय कंडोम का प्रयोग करने से हर्पीस होने से और वायरस फैलाने के बचा जा सकता है.

सिफिलिस

सिफिलिस एक जटिल संक्रमण है जो कि बैक्टीरिया के कारण होता है. यह रोग तीन चरणो मे विकसित होती है: प्रथम, द्वितीय और तृतीय चरण सिफिलिस. हर चरण के लक्षण अलग होते है. प्रथम और द्वितीय चरण मे यह रोग बहुत ही संक्रामक होता है.

सिफिलिस का संक्रमण असुरक्षित सेक्स के दौरान सिफिलिस के छालो से सम्पर्क मे आने से होता है. यह संक्रमण सिफिलिस के रक्त और खुले घावो के निकट शारीरिक सम्पर्क मे आने से भी हो सकता है, जो कि शरीर पर कहीं भी हो सकते है. सिफिलिस का संक्रमण माता से शिशु को भी हो सकता है.
बिना उपचार के प्रथम और द्वितीय चरण की सिफिलिस एच0आई0वी0 ग्रस्त व्यक्ति को अधिक संक्रामक बना सकती है. सिफिलिस होने से किसी एच0आई0वी0 मुक्त व्यक्ति के वायरस से सम्पर्क मे आने पर उसके संक्रमित होने की सम्भावना बढ जाती है. एच0आई0वी0 ग्रस्त लोगो मे सिफिलिस का उपचार करना कठिन हो जाता है और यदि इसका उपचार न किया जाये तो इससे हृदय और मस्तिष्क को क्षति पहुच सकती है और मृत्यु भी हो सकती है.

लक्षण

प्रथम चरण सिफिलिस:

- योनि, गर्भाषय, शिश्न, मुंह, अंडाषय और गुदा पर लाल चकत्तो का दिखना. यह चकत्ते पीड़ा रहित होते है और सामान्यत: बहुत कम समय मे ठीक हो जाते है.
- चकत्ते के निकट के अंगो मे सूजन.

द्वितीय चरण सिफिलिस (सामान्यत: संक्रमण के 6 माह मे विकसित हो जाती है):

- त्वचा पर छिलन के निशान.
- अंगो मे सूजन.
- बुखार.
- मितली या उल्टी.
- बालो का गिरना.
- हाथ और पैरो पर गहरे भूरे रंग के चकत्ते.

तृतीय चरण सिफिलिस (सामान्यत: संक्रमण के 10 वर्ष मे विकसित होती है):

- हृदय को क्षति.
- मस्तिष्क को क्षति (न्यूरोसिफिलिस).
- नाड़ी तंत्र को क्षति.

उपचार

सिफिलिस का उपचार प्रतिजैविक दवाओ से हो सकता है- पेंसीलिन इंजेक्शन अधिकतर लोगो की प्रमुख पसंद है. एच0आई0वी0 ग्रस्त लोगो को सामान्यत: लम्बे समय तक दवा की अधिक खुराक लेनी पड़ती है. अन्य लोगो को सक्रमित होने से बचाने के लिये या पुन: संक्रमित होने से बचाने के लिये, यह आवश्यक है कि सेक्स से तब तक बचा जाये जब तक उपचार पूरा न हो जाये और आप स्वस्थ्य न हो जाये. उपचार के बाद रक्त जांच करानी चाहिये कि पता चल जाये कि संक्रमण समाप्त हो गया है.

बचाव

मौखिक सेक्स के दौरान कंडोम और मौखिक सुरक्षा का प्रयोग और अन्य सेक्स के दौरान कंडोम का प्रयोग सिफिलिस से बचाव और संक्रमण फैलने से रोकने मे प्रभावशाली होता है. आपको खुले घावो के सम्पर्क मे आने से बचना चाहिये. सुरक्षा सम्पूर्ण नही हो सकती क्योकि सभी चोट और घाव जननांगो पर नही होते है. वह लोग जो कि सेक्स के सक्रिय है उन्हे नियमित स्वास्थ्य जांच करानी चाहिये, जिसमे सिफिलिस और अन्य सेक्स संक्रमण की जांच होगी.

गुप्तांगो मे गांठ

गुप्तांगो मे गांठ, त्वचा के नीचे रहने वाले एक बहुत ही साधारण वायरस के कारण होती है. यह वायरस ह्यूमन पैपीलोमा वायरस के नाम से जाना जाता है. इस वायरस के कुछ प्रकार गर्भाषय और गुदा के कैंसर का कारण

भी हो सकते है. यह खतरा एच0आई0वी0 पीड़ित लोगो मे अधिक होता है क्योकि रोग प्रतिरोधी क्षमता के कम होने के कारण यह वायरस पुन: सक्रीय हो सकता है. एक बार आप इससे संक्रमित हो गये तो आपको जीवन भर इस वायरस के साथ जीना पड़ेगा, किंतु इसका यह अर्थ नही है कि आपको जीवन भर इन गांठो का सामना करना पड़ेगा.

गुप्तांगो मे गांठ असुरक्षित सेक्स से भी फैल सकती है. यह गांठ के निकट शारीरिक सम्पर्क से भी फैल सकती है क्योकि इन गांठो से वायरस झड़ता है.

लक्षण

गुप्तांगो मे गांठो के लक्षण संक्रमण के कुछ सप्ताह बाद दिखने लगते है. यह गांठे शरीर के अन्य भागो मे पर होने वाली गांठो के समान ही होती है -- छोटी किंतु मोटी और सख्त त्वचा वाली. यदि आप उपचार न किया जाये तो इनका आकार बढता जाता है और गोभी के समान होता जाता है. कभी इन गांठो मे खुजली भी हो सकती है और गुदा की गांठो मे रक्त स्राव भी हो सकता है. कितु कुछ लोगो मे इस वायरस के संक्रमण के बाद भी कोई लक्षण दिखाई नही देता है, या उनहे इन गांठो के निकलने का पता नही चलता है. महिलाओ मे यह गांठे योनि के अंदर या बाहर हो सकती है. यह गर्भाषय के त्वचा पर या गुदा के निकट भी हो सकती है. पुरुषो मे गांठे शिश्न पर या गुदा मे पास हो सकती है.

उपचार

यद्यपि गुप्तांगो की गांठो के वायरस संक्रमण का उपचार सम्भव नही है किंतु गांठो का उपचार सम्भव है. गांठो को रसायनो से साफ किया जा सकता है या फिर जमा कर निकाला जा सकता है. अन्य उपचार मे लेज़र शल्य क्रिया या एक नई प्रतिरोधी क्षमता बढाने वाली क्रीम भी है. इस उपचारो को कार्य करने मे समय लगता है, इसलिये आपको इन गांठो के समाप्त होने तक कई बार उपचार कराना पड़ा सकता है. यह उपचार कई बार थोड़े असुविधाजनक भी हो सकते है. पुन: संक्रमण रोकने के लिये आपके आपके साथी को भी उपचार कराना आवश्यक है. यह भी आवश्यक है कि आप गांठो के दिखने के बाद से कंडोम का प्रयोग तब तक करे जब तक उपचार चलता रहे. डॉक्टरो की सलाह है कि गांठ के समाप्त हो जाने के तीन माह बाद भी आप कंडोम का प्रयोग करे.

बचाव

गांठ के दिखने पर आप को उसके सम्पर्क मे आने से बचना चाहिये, और मौखिक सेक्स मे सुरक्षा साधनो और कंडोम का प्रयोग और गुदा और योनि से सेक्स के दौरान कंडोम का प्रयोग करने से गुप्तांगो मे गांठ के संक्रमण से बचाव किया जाा सकता है. वह लोग जो कि सेक्स मे सक्रिय रहते है उन्हे नियमित रूप से सेक्स स्वास्थ्य की जांच करानी चाहिये, जिससे यदि गांठे है तो उनकी पहचान की जा सकता है और अन्य सेक्स संक्रमण की भी जांच की जा सकती है.

<u>इस जानकरी के स्त्रोत</u>

- क्लैमीडिया (फैमिली प्लैनिंग एसोसिएशन, 2003)
- गोनोरिया (फैमिली प्लैनिंग एसोसिएशन, 2003)

- इंट्रोडक्शन टु एच0आई0वी0 एंड एड्स (2005)
- लव स्टिंग्स: ए बिगिनर्स गाईड टु सेक्शुएली ट्रांस्मिटेड इंफेक्शंस (फैमिली प्लैनिंग एसोसिएशन, 2004)
- लवलाईफ: सेक्शुएल हेल्थ फॉर यंग पीपल (हेल्थ प्रमोशन इंगलैंड, 1999,2000)
- नाम फैक्टशीट 54, (जनवरी 2004)
- साइंस एंड सक्सेस इन डेवेलपिंग कंट्रीस: होलिस्टिक प्रोग्राम्स दैट वर्क टु प्रेवेंट टीन प्रेग्नेंसी, एच0आई0वी0 एंड सेक्शुएली फॉर यूथ, 2005)
- सेक्शुएली ट्रांस्मिटेड इंफेक्शंस: वैर टु गो फॉर हेल्प एंड एडवाइस (फैमिली प्लैनिंग एसोसिएशन, 2003)
- टीचर्स गाइड: स्कूल हेल्थ एजुकेशन टु प्रेवेंट एड्स एंड एस0टी0डी0- ए रिसोर्स पैकेज फॉर करीक्युलम प्लैनर्स (वर्ल्ड हेल्थ ऑर्गनाइज़ेशन एंड युनाइटेड नेशंस एजुकेशनल, साइंटिफिक एंड कल्चरल ऑर्गनाइज़ेशन, 1994)
- द गुड सेक्शुअल हेल्थ गाइड, (लेस्बियन एंड गे फाउंडेशन, अगस्त 2004)